



मानव सम्पदा

मानव संसाधन प्रबंधन के लिए ई-प्रणाली

नव परियोजना

मानव सम्पदा – मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली

एक उत्पाद के रूप में विकसित, मानव सम्पदा (ई-एच.आर.एम.एस. - इलेक्ट्रॉनिक मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली) सरकारी क्षेत्र के लिए मानव संसाधन प्रबंधन के लिए एक ऐसी इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है, जो कार्मिक प्रबंधन से संबंधित राज्य सरकारों की सभी प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। इस प्रणाली को सरकारी विभागों के लिए एक सामान्यीकृत मानव संसाधन प्रबंधन समाधान प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है ताकि उन्हें कर्मचारियों के कौशल के आधार पर उचित निगरानी, जन शक्ति नियोजन, भर्ती, तैनाती, पदोन्नति, स्थानांतरण आदि और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय लेने में सहायता मिल सके।

सर्वप्रथम यह परियोजना हिमाचल प्रदेश राज्य में विकसित एवं लागू की गई थी जिसके परिणामस्वरूप मानव संसाधनों के प्रबंधन में अत्यधिक लाभ हुआ। मानव सम्पदा न केवल जन शक्ति नियोजन का समाधान है, बल्कि यह एक मूल अनुप्रयोग है और अन्य अनुप्रयोगों के साथ इसका एकीकरण करके, इसके दायरे को अन्य G2G, G2E और G2C सेवाओं तक भी विस्तारित किया गया है।

मानव सम्पदा का प्राथमिक उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से कार्मिक प्रबंधन के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार के विभागों तथा संगठनों को एक उत्पाद-आधारित समाधान प्रदान करना है। यह प्रणाली कर्मचारियों की सटीक संख्या, सेवानिवृत्ति, भर्ती योजना के लिए भविष्य में कार्य बल की आवश्यकताओं, सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए आवश्यक धन, राज्य के भीतर अन्य विभागों/संगठनों में अधिशेष कर्मचारियों के पुनः आवंटन, वरिष्ठता सूची, वार्षिक गोपनीयता रिपोर्ट, संपत्ति विवरण आदि के प्रबंधन एवं जानने में शीर्ष प्रबंधन की सहायता करती है।

हिमाचल प्रदेश में प्रारंभिक विकास और कार्यान्वयन के बाद, इसके लाभ को देखते हुए, इस सॉफ्टवेयर को एक उत्पाद के रूप में विकसित किया गया और अब यह प्रणाली 20 से अधिक राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और भारत सरकार के अन्य विभागों में कार्यान्वित है। यह एक पूर्णतः स्केलेबल जेनेरिक उत्पाद है और इसे एक विश्वसनीय अत्याधुनिक आधारभूत संरचना पर डिजास्टर रिकवरी (डी.आर.) प्रणाली के साथ होस्ट किया गया है।

इस प्रणाली के साथ विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन भी विकसित की गई हैं। ई-एच.आर.एम.एस. एच.पी., मानव सम्पदा और ई-ट्रांसफर आदि मोबाइल एप्लिकेशन विभिन्न प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं और कर्मचारियों के लिए सेवा पुस्तिका विवरण, वेतन विवरण, जी.पी.एफ./एन.पी.एस. विवरण और दैनिक उपस्थिति जानकारी सहित विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाती हैं।

<https://genpmis.hp.nic.in>

<https://ehrms.nic.in>

श्री अमरजीत सिंह, भा.प्र.से.

विशेष सचिव, (कार्मिक), हिमाचल प्रदेश (वर्तमान, उपायुक्त हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश)



मानव सम्पदा सॉफ्टवेयर कर्मचारियों के सेवा इतिहास, ऑनलाइन ऑर्डर, वार्षिक गोपनीयता रिपोर्ट, पेंशन, मुआवजा, व्यक्तिगत विवरण और जन सांख्यिकीय जानकारी आदि को एकत्र करके प्रत्येक कर्मचारी के कौशल का विश्लेषण करने के लिए एक मानव संसाधन प्रणाली है। यह सरकार में विभिन्न स्तरों पर कागज के न्यूनतम उपयोग के साथ एक कार्य प्रवाह आधारित उत्पाद है, जिसके परिणामस्वरूप सेवा विषयों का तेजी से निपटारा होता है और इससे कार्बन क्रेडिट रेटिंग में भी सुधार होता है। मानव सम्पदा सॉफ्टवेयर के कार्यान्वयन से मानव संसाधन संबंधी निर्णय प्रभावी एवं पारदर्शी तरीके से लागू किये जा सकते हैं।

इसमें सार्वजनिक प्रशासन की पूरी प्रक्रिया, नीतियों के निर्माण में अंतर्निहित प्रक्रिया, मानव संसाधन विकास द्वारा सरकारी तंत्र को पुनः कुशल बनाने के लिए आवश्यक प्रयास, सार्वजनिक संसाधनों की प्राथमिकता और कुशल प्रबंधन के साथ-साथ लोक हितकारी राज्य की अवधारणा को साकार करने के लिए उपयोग किए जाने वाली विभिन्न प्रणालियों को विकसित करना शामिल है।

मैं, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश को, प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के कुशल, पारदर्शी और निष्पक्ष प्रबंधन के लिए इस तरह का समग्र समाधान विकसित करने के लिए बधाई देता हूँ।

टेक टिप्स



बिटलॉकर

बिटलॉकर - एक विंडोज एन्क्रिप्शन तकनीक है जो ड्राइव को एन्क्रिप्ट करके डेटा को अनधिकृत पहुंच से बचाती है। इसे अनलॉक करने के लिए प्रमाणीकरण के एक या अधिक कारकों की आवश्यकता होती है। डेटा तक संभावित अनधिकृत प्रयास का पता चलने पर, विंडोज को बिटलॉकर पुनर्प्राप्ति कुंजी (BitLocker Recovery Key) की आवश्यकता होती है। बिटलॉकर विश्वसनीय प्लेटफॉर्म मॉड्यूल (TPM - Trusted Platform Module) के साथ उपयोग किए जाने पर अधिकतम सुरक्षा प्रदान करता है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सिस्टम ऑफ़लाइन होने की स्थिति पर किसी ड्राइव के साथ छेड़छाड़ नहीं की गई है।

नवीनतम गतिविधियां

साइबर सुरक्षा एवं साइबर जागरूकता

साइबर सुरक्षा से संबंधित विषय पर विभिन्न विभागों को संवेदनशील बनाने के लिए एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा एक विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश राज्य केंद्र, सी.जी.ओ. परिसर और जिला इकाइयों द्वारा सरकारी कार्यालयों में डिजिटल संपत्तियों एवं महत्वपूर्ण सूचनाओं के बुनियादी ढांचे को सुरक्षित करने और डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 पर विभिन्न स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित की गई। डिजिटल दुनिया में क्या करें और क्या न करें, भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-In) की भूमिका और साइबर सुरक्षा से संबंधित विभिन्न संगठनों के बारे में भी उपयोगकर्ताओं को जागरूक किया गया।



जिला सूचना-विज्ञान अधिकारी कांगड़ा, श्री भूपिंदर पाठक द्वारा मंडलायुक्त कांगड़ा के नेतृत्व में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के लिए 'सचेतन' नामक पहल के उद्घाटन अवसर पर 01 मार्च, 2024 को विभिन्न ई-सेवाओं तथा साइबर सुरक्षा के विषय पर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धर्मशाला में विस्तृत प्रस्तुति दी गई।

अटल सुरंग - जनजातीय भूमि का प्रवेश द्वार

वर्ष 2020 में निर्मित, अटल सुरंग रोहतांग सामरिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण सुरंग है जो मनाली और केलांग के बीच की यात्रा के समय को लगभग आधा कर देती है। सुरंग का नाम, पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर, देश के बुनियादी ढांचे के विकास में उनके योगदान और देश के दूरस्थ और आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों के उत्थान के लिए उनकी प्रतिबद्धता के लिए रखा गया है।

अटल सुरंग रोहतांग 9.02 कि.मी. लंबी है और समुद्र तल से लगभग 3,000 मीटर (10000 फुट) की ऊंचाई पर हिमाचल प्रदेश में स्थित है। इस ऊंचाई पर यह दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग है और इसे ₹3,000 करोड़ से अधिक की लागत से बनाया गया है। इस सुरंग का दक्षिणी पोर्टल जिला कुल्लू में जबकि उत्तरी पोर्टल जिला लाहौल-स्पीति में पड़ता है। सुरंग की ऊंचाई 8 मीटर और चौड़ाई 10 मीटर है, जिससे अधिकतम 4.5 मीटर की ऊंचाई वाले वाहनों की आवाजाही और दोतरफा यातायात की सुविधा मिलती है।



सुरंग का निर्माण आधुनिक टनलिंग तकनीक के प्रयोग से किया गया है और इसे केवल 7 वर्षों में पूरा किया गया, जिससे यह भारत में सबसे तेज़ सुरंग निर्माण परियोजनाओं में से एक है। यह सुरंग उन्नत सुरक्षा सुविधाओं से सुसज्जित है, जिसमें आग का पता लगाने और दमन प्रणाली, वेंटिलेशन सिस्टम और एक उन्नत यातायात प्रबंधन प्रणाली शामिल है।

यह सुरंग लाहौल-स्पीति घाटी के लिए सभी मौसम में आवागमन का मार्ग प्रदान करती है जो पूर्व में भारी बर्फबारी के कारण देश के शेष क्षेत्रों से हर वर्ष लगभग छः माह तक के लिए कट जाता था। इससे क्षेत्र में समग्र विकास और पर्यटन को भी बढ़ावा मिला है तथा स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच बढ़ी है।

कैसे पहुंचें



वायु मार्ग द्वारा: अटल सुरंग से निकटतम हवाई अड्डा, कुल्लू-मनाली हवाई अड्डा है जो कुल्लू जिले के भुंतर में स्थित है। यहाँ से टैक्सी या बस द्वारा सड़क मार्ग से अटल सुरंग तक पहुंच सकता है। कुल्लू-मनाली हवाई अड्डे से अटल सुरंग की दूरी लगभग 78 कि.मी. है और सड़क मार्ग द्वारा इस यात्रा में लगभग 2 घंटे लगते हैं।



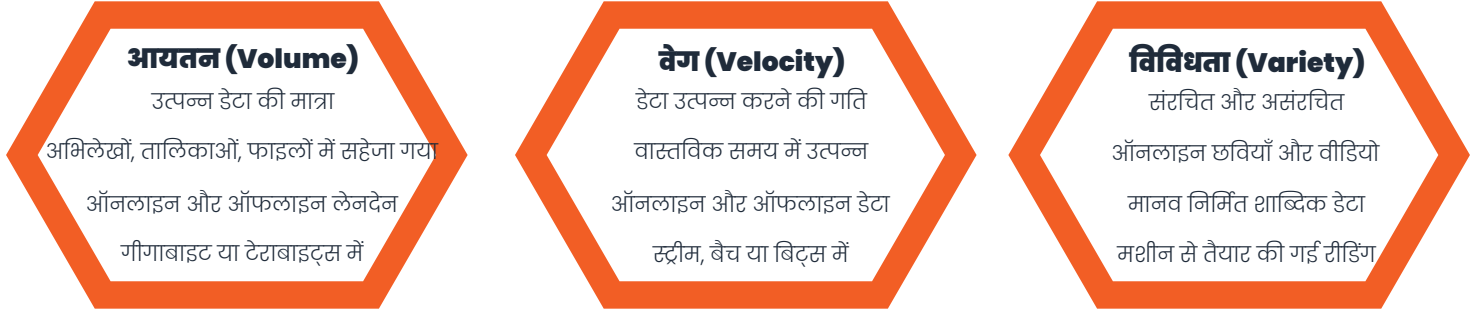
रेल मार्ग द्वारा: अटल सुरंग से निकटतम ब्रॉड गेज रेलवे स्टेशन किरतपुर और चंडीगढ़ हैं जो क्रमशः 228 कि.मी. और 296 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं और भारत के सभी प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। निकटतम नैरो गेज रेलवे स्टेशन 172 कि.मी. दूर कांगड़ा-वैली रेलवे लाइन पर जोगिंदर नगर में स्थित है। इन सभी स्थानों से अटल टनल के लिए टैक्सी और नियमित बस सेवाएँ उपलब्ध हैं।



सड़क मार्ग द्वारा: अटल सुरंग मनाली से 28 कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग-3 पर स्थित है और यह स्थान सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

बिग डेटा

बिग डेटा से तात्पर्य डेटा के बड़े, जटिल एवं विविध आयामों से है जो लगातार तीव्र दर से बढ़ते हैं और प्रायः पारंपरिक डेटा प्रबंधन उपकरणों की प्रसंस्करण क्षमताओं से बाहर होते हैं। यह बहुआयामी डेटा, विभिन्न स्रोतों जैसे कि सोशल मीडिया, सेंसर, ऑनलाइन लेनदेन, मोबाइल उपकरण आदि से आता है। इसकी विशेषताओं को आम तौर पर नीचे उल्लिखित "3 V" के संदर्भ में वर्णित किया जाता है:



बिग डेटा का प्रभाव

बिग डेटा की वास्तविक क्षमता इसके अंतर्गत छिपे हुए पैटर्न, सह-संबंधों और रुझानों को उजागर करने में निहित है जो पहले अज्ञात थे। विभिन्न क्षेत्रों के व्यवसाय में बिग डेटा एनालिटिक्स की उपयोगिता अति महत्वपूर्ण है, जैसे कि:

निर्णय लेने की क्षमता: विशाल डेटासेट का विश्लेषण करने से संगठनों को डेटा-संचालित निर्णय लेने, जोखिमों को कम करने और परिणामों को अनुकूलित करने में सहायता मिलती है।

ग्राहक अंतर्दृष्टि: डेटा विश्लेषण/एनालिटिक्स के माध्यम से उपभोक्ता व्यवहार को समझना, व्यक्तिगत विपणन रणनीतियाँ बनाने तथा बेहतर ग्राहक अनुभव आदि प्रदान करने में सहायता मिलती है।

नवाचार और अनुसंधान: बिग डेटा स्वास्थ्य देखभाल तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देता है। बिग डेटा के उपयोग से स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में जीनोमिक अनुसंधान से लेकर भविष्य के स्वास्थ्य विश्लेषण तक परिवर्तनकारी सफलताओं की बहुत अधिक संभावना है।

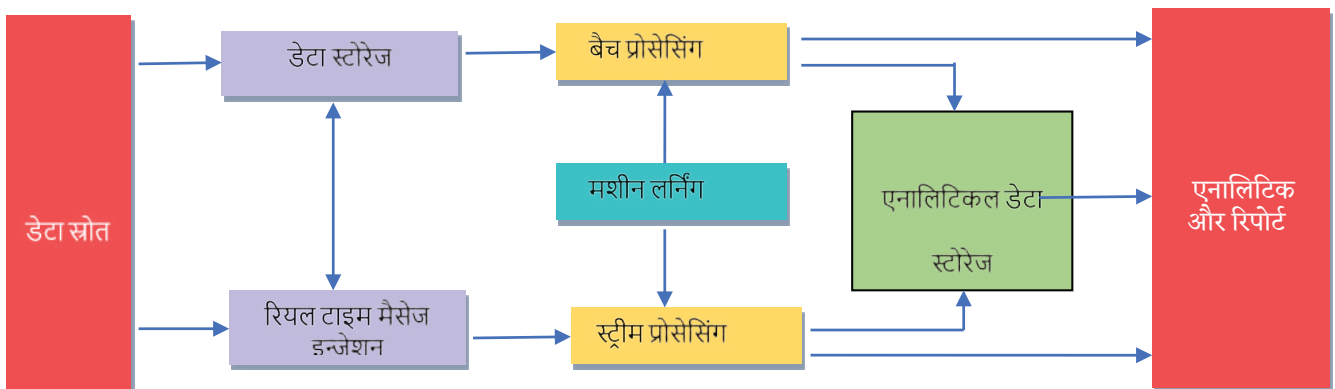
चुनौतियाँ और अवसर

अपनी अविश्वसनीय क्षमता के बावजूद, बिग डेटा में डेटा प्रबंधन, गोपनीयता और सुरक्षा आदि क्षेत्रों में काफी चुनौतियाँ हैं। बड़े पैमाने पर डेटासेट को संभालने, भंडारण और सुरक्षा के लिए मजबूत बुनियादी ढांचे और कड़े सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, डेटा गोपनीयता और नैतिक उपयोग सुनिश्चित करना ऐसे युग में बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ डेटा उल्लंघनों और दुरुपयोग ने गंभीर चिंताएं बढ़ा दी हैं।

तथापि, ये चुनौतियाँ अवसर भी पैदा करती हैं। डेटा भंडारण में नवाचार, ह्यूप और स्पार्क जैसी प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियाँ, मशीन लर्निंग और ए.आई./कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति ने बिग डेटा के उपयोग करने के तरीके में क्रांति ला दी है। क्लाउड कंप्यूटिंग ने स्केलेबल बुनियादी ढांचे तक पहुंच को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिसने सभी आकार के व्यवसायों को बिग डेटा की शक्ति का लाभ उठाने में सक्षम बनाया है।

निष्कर्ष

बिग डेटा केवल सूचना की मात्रा के बारे में ही नहीं है; अपितु यह उन अनेकों अन्य अवसरों के बारे में भी है जो यह प्रदान करता है। प्रभावी ढंग से उपयोग किए जाने पर बिग डेटा में व्यवसायों में क्रांति लाने, नवाचार को बढ़ावा देने और जीवन को बेहतर बनाने की क्षमता है। जैसे-जैसे हम इस डेटा-संचालित युग में आगे बढ़ रहे हैं, नैतिकता, जिम्मेदारी, गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, बिग डेटा के लाभों को अर्जित कर सकते हैं।



रवि कृष्ण मीना, पूर्व एन.आई.सी. सदस्य

आज मैं 12 नवंबर, 2018 की उस सुबह को याद कर रहा हूँ जब मैं एक हाथ में कम्बल और दूसरे में एक बैग लिए चम्बा आया। इसी दिन से शुरू हुआ मेरा अतिरिक्त ज़िला सूचना-विज्ञान अधिकारी चम्बा का सफर, जब मैंने एन.आई.सी. चम्बा में वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक - ए का पद ग्रहण किया। श्री वीरेंद्र प्रताप गुप्ता (वैज्ञानिक अधिकारी/इंजीनियर-एस.बी) ज़िला सूचना-विज्ञान अधिकारी सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश जो कि उस समय चम्बा में मेरे वरिष्ठ सहयोगी थे, उनके मार्गदर्शन में मैंने सभी औपचारिकताएँ पूरी की।



शुरुआती दिनों में उन्होंने ही मुझे एन.आई.सी. के सभी सॉफ्टवेयर से अवगत करवाया व एन.आई.सी. की कार्य प्रणाली को अच्छे से समझने में सहायता की। हिमाचल प्रदेश के सभी ज़िला सूचना-विज्ञान अधिकारियों ने समय समय पर हर तरीके से मेरी सहायता की। हमीरपुर और सिरमौर ने ज़िला वेबसाइट के बारे में सिखाया तो बिलासपुर, किन्नौर व कुल्लू ने ज़िले की अन्य गतिविधियों के बारे में सिखाया। शिमला से शस्त्र लाइसेंस और आई.वी.एफ.आर.टी. के बारे में, तो काँगड़ा से परिवहन विभाग के विभिन्न सॉफ्टवेयर के बारे में सीखने को मिला। ऊना ने हिमभूमि (जो की उस समय क्लाउड सर्वर आधारित आर्किटेक्चर पर कार्य करता था) तो मंडी ने एस.एम.आई.एस, ई-रोजनामचा और सोलन ने पेंशन सॉफ्टवेयर को समझने में सहायता की। सभी का नाम लेना शायद संभव नहीं है लेकिन, राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारी श्री अजय सिंह चैहल, सभी ग्रुप प्रमुखों एवं सदस्यों ने हर संभव सहायता प्रदान की। भू-अभिलेख, ई-टेंडर, मानव संपदा और ऐसे ही राज्य में चलने वाले हर सॉफ्टवेयर के लिए सभी प्रकार की सहायता हमेशा मिली। इसी बीच ज़िले के 'चलो चम्बा' अभियान के लिए एंड्राइड एप्लीकेशन बनाने का भी अवसर मिला जिसके लिए राज्य सूचना-विज्ञान केंद्र द्वारा मार्गदर्शन किया गया। हिमाचल प्रदेश का एक मात्र आकांशी ज़िला होने के कारण, चम्बा को <http://championsofchange.gov.in/> को सँभालने की एक अतिरिक्त जिम्मेदारी भी रही।

वर्ष 2022 में हिमाचल प्रदेश से श्री विनोद गर्ग और श्री शैलेंद्र कौशल के साथ अहमदाबाद में डिजिटल इंडिया आयोजन में भाग लेने का अवसर भी मिला जिसमें पहली बार हिमाचल के बाहर एन.आई.सी. के अन्य सदस्यों से मिलना और सीखना हुआ। एन.आई.सी. के कारण ही प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री जैसे उच्च स्तर के आयोजनों को सँभालने का उत्तरदायित्व भी मिला। हर प्रशासनिक अधिकारी अपना एक अलग नजरिया और कार्यशैली लेकर आता है और चूँकि एन.आई.सी. ज़िला प्रशासन के साथ मिल कर कार्य करती है, इसलिए पिछले पांच वर्षों में चार उपायुक्तों के साथ कार्य करने और बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। एन.आई.सी. ने वास्तविक दुनिया में सॉफ्टवेयर विकास के सभी चरणों (रचना, विकास और कार्यान्वयन) को सीखने में सहायता की।

सतीश कुमार, पूर्व एन.आई.सी. सदस्य

मैंने अपनी व्यवसायिक यात्रा 20 मई, 1993 को एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश राज्य केंद्र शिमला में स्टाफ कार चालक के रूप में आरंभ की और इस अवधि में कई वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवधि के दौरान, मुझे विभिन्न राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारियों के साथ रोहतांग दर्रा, केलांग, काजा, किन्नौर सहित अत्यंत दुर्गम पर्वतीय मार्गों से होते हुए पूरे प्रदेश में वाहन चलाने का अवसर प्राप्त हुआ। एक चालक के रूप में, मेरी भूमिका केवल अधिकारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने तक ही सीमित नहीं थी, अपितु मैं विभिन्न महत्वपूर्ण बैठकों, देर रात के कोडिंग सत्रों तथा नवाचारी परियोजनाओं के जन्म का एक मौन साक्षी रहा हूँ। एन.आई.सी. परिवार ने मुझे सहनशीलता एवं टीमवर्क की महत्ता सिखाई।



COVID-19 महामारी के दौरान काम करना पूरी तरह से अलग अनुभव था। लॉक डाउन के दौरान, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश की टीम आई.सी.एम.आर. (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) के लिए समयबद्ध महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर 24 घंटे काम कर रही थी। टीम का सदस्य होने के नाते, मैंने परिवहन सुविधाएं प्रदान करने में टीम के साथ दिन-रात लगातार काम किया और मुझे अपने योगदान पर गर्व है।

अंत में, मैं एक पंक्ति साझा करना चाहता हूँ जिसने मेरे पूरे सेवा काल में मेरा मार्गदर्शन किया है: "सड़क लंबी हो सकती है, लेकिन हर मील की यात्रा सार्थक होती है"। मैं, एन.आई.सी. शिमला में अपने कार्यकाल से पूर्णतया संतुष्ट हूँ और एन.आई.सी. के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।



श्री रवि कृष्ण मीना, वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक - बी, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में लगभग 5¼ वर्ष की बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान करने के बाद, भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In) में वैज्ञानिक - सी के पद पर नियुक्ति के उपरांत, 10 फरवरी, 2024 को एन.आई.सी. से सेवामुक्त हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश रवि कृष्ण मीना को उज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

पूर्व राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारी (हिमाचल प्रदेश), श्री राजेश बहादुर, उप महानिदेशक एवं राज्य समन्वयक (एन.आई.सी. हि.प्र.) लगभग 36 वर्षों की गौरवशाली सेवाएँ प्रदान करने के बाद, 29 फरवरी, 2024 को एन.आई.सी. मुख्यालय से सेवानिवृत्त हुए।

विभागीय चालक श्री सतीश कुमार, लगभग 31 वर्ष की उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने के बाद, 29 फरवरी, 2024 को एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश से सेवानिवृत्त हुए।

श्री नीरज गोयल, एन.आई.सी. में लगभग 36 वर्ष की अनुकरणीय सेवाएँ प्रदान करने के बाद, 31 मार्च, 2024 को एन.आई.सी. मुख्यालय से वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)/वैज्ञानिक-एफ के पद से सेवानिवृत्त हुए।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश सभी सेवानिवृत्त सदस्यों के सुखी, स्वस्थ और आनंदमय जीवन की कामना करता है।

“असंभव वह नहीं जो हम कर नहीं पाते, असंभव वह है जो हम करना नहीं चाहते।”

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

परामर्श : श्री अजय सिंह चैहल

संवाद पत्र टीम

मुख्य संपादक : श्री विनोद कुमार गर्ग

संपादक : श्री भूपिंदर पाठक, श्री अखिलेश भारती,
श्री बृजेन्द्र कुमार डोगरा

डिज़ाइन और रचनात्मक कलाएँ : श्री सर्वजीत कुमार

योगदानकर्ता

श्री संजय कुमार
श्री ब्रिजेंद्र कुमार डोगरा
सुश्री अंकिता मिश्रा
श्री रामनारायण यादव

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र
हिमाचल प्रदेश राज्य केंद्र, छठी मंजिल, आम्सडिल बिल्डिंग,
हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला हिमाचल प्रदेश - 171002
+91-177-2624045 sio-hp@nic.in
<https://nichimachal.nic.in>

NIC एनआईसी
National
Informatics
Centre